गेट सिस्टम को बंद नहीं करते, कम यात्री फंसते बदरीनाथ धाम में

समय रहते संभल जाते तो नहीं होती फजीहत

- बदरीनाथ के लिए जोशीमठ से देर रात तक जाते रहे वाहन
- यात्रा सीजन में आठ बजे के बाद पहाड़ों में नहीं चलते वाहन
- स्थानीय लोगों के विरोध के बाद भी नहीं माना प्रशासन

अमर उजाला ब्यूरो

देहरादून। समय रहते शासन-प्रशासन संभल जाता, तो इतनी फजीहत नहीं झेलनी पड़ती। चमोली पुलिस प्रशासन वर्षों से बदरीनाथ को जाने केलिए जोशीमठ के गेट सिस्टम को इस बार समाप्त नहीं करता, तो बदरीनाथ धाम में फंसने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या कम होती।

यात्रा सीजन के दौरान जहां ऋषिकेश से चारधाम जाने वाले वाहनों को आठ बजे बाद जाने की अनुमति नहीं मिलती, वहीं चमोली पुलिस प्रशासन ने इस बार बदरीनाथ धाम जाने वाले तीर्थयात्रियों के वाहन पर कोई लगाम नहीं रखी और वाहन देर रात तक भी धाम केलिए निकलते रहे।

गत वर्षों तक जोशीमठ में चार बजे शाम को बदरीनाथ जाने वाले वाहनों के लिए गेट बंद हो जाता था, जिससे कि चार बजे के बाद आने वाले तीर्थयात्री जोशीमठ में ही रुक जाते थे। लेकिन इस बार पहली बार ऐसा हुआ कि प्रशासन ने गेट सिस्टम ही बंद कर दिया और तीर्थयात्री रात 11-12 बजे तक भी बदरीनाथ में जाते रहे। परिणाम स्वरूप बदरीनाथ धाम में तीर्थयात्रियों की इतनी भीड़ जुट गई थी कि सारे धर्मशालाएं, लॉज खचाखच भरे होने के बाद लोगों को कड़ाकेकी ठंड में भी बसों के नीचे रात गुजारनी पड़ी। प्रशासन जोशीमठ केगेट सिस्टम को बद नहीं करता, तो बदरीनाथ धाम में फंसने वाले यात्रियों की संख्या कम होती।

जोशीमठ से बदरीनाथ जाने वाला करीब 45 किमी मार्ग का हाल ही में चौड़ीकरण हुआ है। मार्ग लामबगड़ और कंचनगंगा में अभी भी बारिश होते ही भूस्खलन शुरू हो जाता है। लामबगड़ में तो वर्ष 2005 में बादल फटने से 100 मीटर मार्ग पूरी तरह से ध्वस्त हो चुका था। इस दौरान भी यहां 17 तीर्थयात्रियों की मौत हुई थी और पांच हजार से अधिक दो-तीन दिन तक फंसे रहे। जिन्हें बाद में बिष्णुप्रयाग जल विद्युत परियोजन की टनल और हवाई सेवा से जोशीमठ पहुंचाया गया था। बावजूद इसकेप्रशासन ने तीर्थयात्रियों की सुरक्षा को दरकिनारे रखते हुए वाहनों को धाम जाने के लिए देर रात तक जाने की अनुमति देता रहा। स्थानीय लोगों ने इसका विरोध भी किया। कई बार ज्ञापन देकर आंदोलन करने तक की धमकी दी गई, लेकिन प्रशासन ने नहीं सुनी।